सूरह — एक कहानी

सूरह अल-कह्फ़

ग़ार

पूरा सफ़र — चार कहानियाँ, चार आज़माइशें —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 18 • 110 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

अल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी अन्ज़ल 'अला 'अब्दिहिल्-किताब व लम यज्'अल्-लहू 'इवजा
1. तारीफ़ अल्लाह के लिए जिसने अपने बंदे पर किताब उतारी और उस में कोई कजी न रखी।

इन्नहुम फ़ित्यतुन आमनू बि-रब्बिहिम व ज़िद्नाहुम हुदा
13. बेशक वो नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए, और हमने उन्हें हिदायत में बढ़ा दिया।

व ला तक़ूलन्न लि-शै-इन इन्नी फ़ा'इलुन ज़ालिक ग़दा; इल्ला अंय्यशा-अल्लाह
23-24. और किसी चीज़ के बारे में हरगिज़ मत कहो कि मैं ये कल ज़रूर करूँगा, सिवाए ये कि अल्लाह चाहे।

व लौला इज़ दख़ल्त जन्नतक क़ुल्त मा शा-अल्लाहु ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह
39. और जब तू अपने बाग़ में दाख़िल हुआ तो क्यों न कहा: 'मा शा अल्लाह, ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह'?

व मा फ़'अल्तुहू 'अन अम्री
82. और मैंने ये अपनी मर्ज़ी से नहीं किया।

फ़-मन काना यर्जू लिक़ा-अ रब्बिही फ़ल्-यअ्मल 'अमलन सालिहंव्-व ला युश्रिक बि-'इबादति रब्बिही अहदा
110. तो जो अपने रब से मुलाक़ात की उम्मीद रखे वो नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न बनाए।

एक किताब जिस में कोई कजी नहीं

बेटा, ये वो सूरह है जिसे नबी ﷺ ने हमें हर जुमा पढ़ने को कहा। आपने फ़रमाया कि जो जुमा के दिन सूरह अल-कह्फ़ पढ़ेगा उसके लिए दो जुमों के दरमियान एक **नूर** चमकेगा। और आपने फ़रमाया कि जो इसकी पहली दस आयतें याद करेगा वो दज्जाल से महफ़ूज़ रहेगा।

तो इस सूरह में कुछ ऐसा है, बेटा, जो ख़ास तौर पर एक मोमिन को **फ़रेब** के

ख़िलाफ़ लैस करता है। इसे ज़ेहन में रखिए जैसे हम आगे बढ़ते हैं, क्योंकि इस में चार कहानियाँ चार आज़माइशें हैं — और हर एक के साथ एक इलाज जुड़ा है।

'**अल्-हम्दु लिल्लाहिल्-लज़ी अन्ज़ल 'अला 'अब्दिहिल्-किताब व लम यज्'अल्-लहू 'इवजा — तारीफ़ अल्लाह के लिए, जिसने अपने बंदे पर किताब उतारी और उस में कोई कजी न रखी — क़य्यिमा** — (उसने इसे) **सीधा** (बनाया)।'

बेटा, "इवज' कजी है, एक मोड़, एक बल — और 'क़य्यिमन' सीधा और मुस्तक़ीम और मज़बूती से खड़ा। तो: **उस में कोई तहरीफ़ नहीं, और ये सीधा खड़ा है ताकि उस चीज़ को दुरुस्त करे जो तुम में टेढ़ी है।**

'**व युन्ज़िरल्-लज़ीन क़ालुत्-तख़ज़ल्-लाहु वलदा** — और उन को **ख़बरदार** करे जो कहते हैं: **अल्लाह ने एक बेटा ले लिया — मा लहुम बिही मिन 'इल्मिंव्-व ला लि-आबाइहिम** — उन्हें इसका कोई इल्म नहीं, न उनके बाप-दादा को — **कबुरत कलिमतन तख़्रुजु मिन अफ़्वाहिहिम — बड़ी है वो बात जो उनके मुँह से निकलती है — इंय्यक़ूलून इल्ला कज़िबा** — वो झूठ के सिवा कुछ नहीं कहते।'

और फिर, बेटा, नबी ﷺ के लिए तसल्ली की एक आयत जो ये भी बयान करती है कि ये दुनिया अस्ल में क्या है:

'**फ़-ल'अल्लक बाख़िं'उन-नफ़्सक 'अला आसारिहिम इल्-लम् युअ्मिनू बि-हाज़ल्-हदीसि असफ़ा** — तो शायद तुम उन पर **ग़म में अपने आप को हलाक कर दोगे**, अगर वो इस पैग़ाम पर ईमान न लाएँ, अफ़सोस से।'

'**इन्ना ज'अल्ना मा 'अलल्-अर्ज़ि ज़ीनतल्-लहा लि-नब्लुवहुम अय्युहुम अह्सनु 'अमला — बेशक, हमने जो कुछ ज़मीन पर है उसे उस के लिए एक ज़ीनत बनाया, ताकि हम उन्हें आज़माएँ कि उन में से कौन अमल में बेहतर है — व इन्ना ल-जा'इलून मा 'अलैहा स'ईदन जुरुज़ा — और बेशक, हम जो कुछ उस पर है उसे एक बंजर मैदान बना देंगे।**'

बेटा, इन दोनों आयतों के साथ बैठिए। हर चीज़ जो इस ज़मीन पर है — इमारतें, गाड़ियाँ, बाग़, टेक्नोलॉजी, ख़ूबसूरती — '**ज़ीनह**', **ज़ीनत** बयान की गई है। और उसका मक़्सद नाम किया गया: **देखने के लिए कि कौन बेहतर अमल करता है।**

और फिर: ये सब एक नंगे, सूखे मैदान में हमवार कर दिया जाएगा।

बेटा, यही पूरी सूरह का फ़्रेमवर्क है। अब चार कहानियाँ शुरू होती हैं — और हर एक इस दुनिया की ज़ीनत के साथ एक इम्तेहान का सामना करने वाले किसी शख़्स के बारे में है।

ग़ार वाले नौजवान — ईमान की आज़माइश

'**अम हसिब्त अन्न अस्हाबल्-कह्फ़ वर्-रक़ीमि कानू मिन आयातिना 'अजबा** — या तुमने समझा कि **ग़ार और कतबे वाले** हमारी निशानियों में से कोई हैरत-अंगेज़ बात थे?'

बेटा, शुरू का सवाल ग़ौर कीजिए — गोया ये कहते हुए: **ये कहानी तुम्हें हैरान करती है, मगर आसमान और ज़मीन उस से बड़ी निशानी हैं, और तुम रोज़ उन के पास से गुज़रते हो।**

'**इज़ अवल्-फ़ित्यतु इलल्-कह्फ़ फ़-क़ालू रब्बना आतिना मिल्-लदुन्क रहमतंव्-व हय्यिअ् लना मिन अम्रिना रशदा — जब वो नौजवान ग़ार की तरफ़ पनाह ले गए और कहा: हमारे रब, हमें अपनी तरफ़ से रहमत अता कर और हमारे मामले में हमारे लिए हिदायत तैयार कर।**'

बेटा, वो नौजवान थे जो एक ऐसे हुक्मरान के नीचे जीते थे जो अपनी क़ौम पर बुत-परस्ती थोपता था। वो सिर्फ़ अल्लाह पर ईमान लाए, और उनके अपने शहर में उन के लिए कोई जगह न थी। तो वो उस दुआ के सिवा कुछ लिए बग़ैर एक ग़ार की तरफ़ भाग गए।

'**इन्नहुम फ़ित्यतुन आमनू बि-रब्बिहिम व ज़िद्नाहुम हुदा — बेशक, वो नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए, और हमने उन्हें हिदायत में बढ़ा दिया।**'

बेटा, उस आधे जुमले में उसूल ग़ौर कीजिए: वो ईमान लाए — और अल्लाह ने उन्हें **बढ़ा दिया। हिदायत उस शख़्स के लिए बढ़ती है जो अपने पास जो कुछ पहले है उस पर अमल करता है।** एक क़दम उठाओ, और रास्ते का अगला हिस्सा रौशन हो जाता है।

'व रबत्ना 'अला क़ुलूबिहिम इज़ क़ामू फ़-क़ालू रब्बुना रब्बुस्-समावाति वल्-अर्ज़ि लन नद्'उव मिन दूनिही इलाहा — **और हमने उनके दिलों को बाँध दिया** जब वो **खड़े हुए** और कहा: **हमारा रब आसमानों और ज़मीन का रब है; हम उस के सिवा कभी किसी माबूद को न पुकारेंगे — लक़द क़ुल्ना इज़न शततता** — वरना हम एक बे-तुकी बात कहते।'

बेटा, 'रबत्ना 'अला क़ुलूबिहिम' — हमने उनके दिल **बाँध** दिए। वही जुमला जो मूसा की माँ के लिए इस्तेमाल हुआ। और ग़ौर कीजिए ये **कब** आया: '**इज़ क़ामू**' — **जब वो खड़े हुए।** तक़वियत खड़े होने के लम्हे आई, उस से पहले नहीं।

बेटा, यूँ ही होता है। **तुम शायद ही अमल से पहले बहादुर महसूस करोगे। पहले खड़े हो जाओ; दिल का बाँधा जाना खड़े होने के साथ आता है।**

उन्होंने पनाह ली, और अल्लाह ने उन्हें एक मुद्दत के लिए सुला दिया जिसे क़ुरआन तीन सौ साल और नौ बयान करता है। उसने उन्हें दाएँ-बाएँ पलटाया, और उनका कुत्ता ग़ार के दहाने पर अपने अगले पाँव फैलाए था। और सूरह कहती है कि अगर तुम उन्हें देखते, तो तुम पीठ फेर कर भाग जाते और दहशत से भर जाते।

फिर वो जागे, और एक दूसरे से पूछा कि कितना ठहरे — एक दिन, या दिन का कुछ हिस्सा? बेटा, **तीन सदियाँ एक दोपहर जैसी लगीं।** इसे याद रखिए जब क़ुरआन कहता है कि ये पूरी ज़िंदगी एक दिन के एक घंटे जैसी लगेगी।

'**फ़ल्-यन्ज़ुर अय्युहा अज़्का त'आमन फ़ल्-यअ्तिकुम बि-रिज़्क़िम्-मिन्हु वल्-यतलत्तफ़** — वो देखे कि **कौनसा खाना सब से पाक है** और उस में से तुम्हारे लिए खाना लाए, **और नर्मी और एहतियात बरते।**'

बेटा, उनकी भूक में भी दो ख़ूबसूरत बारीकियाँ: उन्होंने **सब से पाक**, सब से हलाल खाना माँगा — 'अज़्का त'आमन' — और उन्होंने नर्मी और पोशीदगी की हिदायत दी।

और फिर, बेटा, इख़्तिलाफ़ी तफ़्सीलात सँभालने के बारे में हमें एक बहुत अहम हिदायत। लोग इस पर झगड़े कि वो कितने थे: तीन, पाँच, सात — और अल्लाह कहते हैं: '**क़ुर्-रब्बी अअ्लमु बि-'इद्दतिहिम — कहो: मेरा रब उनकी गिनती को बेहतर जानता है — मा यअ्लमुहुम इल्ला क़लील** — उन्हें कम ही लोग जानते हैं —

फ़-ला तुमारि फ़ीहिम इल्ला मिरा-अन ज़ाहिरा — तो उन के बारे में झगड़ा मत करो सिवाए एक ज़ाहिरी (सरसरी) बात के — व ला तस्तफ़्ति फ़ीहिम मिन्हुम अहदा — और उन में से किसी से उन के बारे में मत पूछो।'

बेटा, ये सीखिए: **गिनती कभी अस्ल बात न थी।** अल्लाह जान-बूझ कर इसे बे-मुअय्यन छोड़ देते और हमें कहते हैं कि इस पर मेहनत ज़ाया न करो। और हमारा कितना झगड़ा ठीक यही है — **उन तफ़्सीलात पर लड़ना जिनका कोई फ़ायदा नहीं, जब कि कहानी का सबक़ बिना जिए रह जाता है।**

और फ़ौरन बाद, बेटा, क़ुरआन की सब से अमली हिदायतों में से एक आती है:

'**व ला तक़ूलन्न लि-शै-इन इन्नी फ़ा'इलुन ज़ालिक ग़दा — और किसी चीज़ के बारे में हरगिज़ मत कहो: मैं ये कल ज़रूर करूँगा — इल्ला अंय्यशा-अल्लाह — सिवाए (ये बढ़ा कर) ये कि अल्लाह चाहे — वज़्कुर रब्बक इज़ा नसीत — और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद करो।**'

बेटा, यही वो जगह है जहाँ से '**इन शा अल्लाह**' आता है। एक जुमला इनकार को नर्म करने के लिए नहीं, और अह्द न करने का तरीक़ा नहीं। **ये एक इक़रार है कि कल तुम्हारा नहीं। इसे कहो और इस का मतलब रखो।**

और 'वज़्कुर रब्बक इज़ा नसीत' — जब भूल जाओ तो अपने रब को याद करो। बेटा, **दरवाज़ा उस के लिए भी खुला है जो फिसला।**

दो बाग़ों वाला आदमी — दौलत की आज़माइश

फिर, बेटा, दूसरी कहानी से पहले, अल्लाह सुह्बत के बारे में एक हिदायत देते हैं जिसे हर नौजवान को दो बार पढ़ना चाहिए:

'**वस्बिर नफ़्सक म'अल्-लज़ीन यद्'ऊन रब्बहुम बिल्-ग़दाति वल्-'अशिय्यि युरीदून वज्हह — और अपने आप को उन लोगों के साथ सब्र से रोके रखो जो सुब्ह-शाम अपने रब को पुकारते हैं, उसका चेहरा चाहते हुए — व ला तअ्दु 'ऐनाक 'अन्हुम तुरीदु ज़ीनतल्-हयातिद्-दुन्या — और अपनी आँखें उन से आगे मत बढ़ाओ, दुनियावी ज़िंदगी की ज़ीनत चाहते हुए।**'

बेटा, ये तब उतरी जब मक्का के कुछ सरदारों ने नबी ﷺ से माँगा कि ग़रीब मोमिनीन को हटा दें ताकि वो आपके साथ बैठें। और अल्लाह ने उनसे कहा: **इन्हीं के साथ रहो, और अपनी नज़र इनके आगे मुतअस्सिर-कुन लोगों की तरफ़ मत जाने दो।**

'**व ला तुति' मन अग़फ़ल्ना क़ल्बहू 'अन ज़िक्रिना वत्तब'अ हवाहु व काना अम्रुहू फ़ुरुता** — और उस की बात मत मानो जिसके दिल को हमने अपनी याद से **ग़ाफ़िल** कर दिया, जो अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करता, और जिसका मामला **हद से गुज़रा** हुआ है।'

'**व क़ुलिल्-हक़्क़ु मिर्-रब्बिकुम फ़-मन शा-अ फ़ल्-युअ्मिंव्-व मन शा-अ फ़ल्-यक्फ़ुर** — और **कहो: हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है, तो जो चाहे — ईमान ले आए; और जो चाहे — कुफ़्र करे।**'

बेटा, उस में वक़ार ग़ौर कीजिए। **कोई गिड़गिड़ाहट नहीं, कोई सौदा-बाज़ी नहीं, किसी को जीतने के लिए पैग़ाम को सस्ता करना नहीं।**

और अब दूसरी कहानी: '**वज़्रिब लहुम मसलर्-रजुलैनि** — और उनके सामने **दो आदमियों** की मिसाल पेश करो।' एक को अंगूर की बेलों के दो बाग़ दिए गए जिनके गिर्द खजूर के दरख़्त थे, उन के दरमियान खेती थी, और एक नहर बहती थी। '**किल्तल्-जन्नतैनि अतत उकुलहा व लम तज़्लिम मिन्हु शै-आ** — दोनों बाग़ों में से हर एक ने अपना फल दिया और उस में किसी चीज़ में कमी न की।'

'**फ़-क़ाल लि-साहिबिही व हुव युहाविरुहू अना अक्सरु मिन्क मालंव्-व अ'अज़्ज़ु नफ़रा** — और उसने अपने साथी से, उस से बात करते हुए, कहा: **मैं तुझ से माल में ज़्यादा हूँ और जत्थे में ताक़तवर।**'

बेटा, ये रहा — **वो दो चीज़ें जिन से लोग आज भी एक दूसरे को नापते हैं: पैसा, और तुम्हारे पीछे जमाअत का साइज़।**

'**व दख़ल जन्नतहू व हुव ज़ालिमुल्-लि-नफ़्सिही क़ाल मा अज़ुन्नु अन तबीद हाज़िही अबदा** — और वो अपने बाग़ में दाख़िल हुआ जब कि वो अपने आप पर ज़ुल्म कर रहा था, और बोला: **मैं नहीं समझता कि ये कभी फ़ना होगा** — **व मा**

अज़ुन्नुस्-सा'अत क़ा-इमह — और मैं नहीं समझता कि क़ियामत आएगी — व ल-इर्-रुदित्तु इला रब्बी ल-अजिदन्न ख़ैरम्-मिन्हा मुन्क़लबा — और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटाया भी गया, तो मैं ज़रूर इस से बेहतर लौटने की जगह पाऊँगा।'

बेटा, तीन जुमलों में तीन बीमारियाँ। एक: ये कभी ख़त्म न होगा। दो: शायद कोई क़ियामत नहीं। तीन: और अगर है भी, तो मैं वहाँ भी अच्छा करूँगा — क्योंकि देखो मैं कितना वाज़ेह तौर पर नवाज़ा गया हूँ।

बेटा, वो तीसरी सब से ख़तरनाक है, और वो आज ज़िंदा है: **ये फ़र्ज़ करना कि दुनियावी कामयाबी अल्लाह की रज़ामंदी का सर्टिफ़िकेट है।**

और उसके मोमिन साथी ने उसे जवाब दिया — और बेटा, इस जवाब को पढ़िए, क्योंकि ये किसी को दुरुस्त करने का एक नमूना है:

'**अ कफ़र्त बिल्लज़ी ख़लक़क मिन तुराबिन सुम्म मिन नुत्फ़तिन सुम्म सव्वाक रजुला — क्या तू उस से कुफ़्र करता है जिसने तुझे मिट्टी से, फिर एक बूँद से बनाया, फिर तुझे एक मर्द की शक्ल दी?**'

'**लाकिन्ना हुवल्-लाहु रब्बी व ला उश्रिकु बि-रब्बी अहदा — मगर मेरे लिए, वही अल्लाह मेरा रब है, और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए कि उसने दौलत पर उस से मुक़ाबला नहीं किया। **उसने बस अपना ख़ुद का मुक़ाम बयान किया।**

'**व लौला इज़ दख़ल्त जन्नतक क़ुल्त मा शा-अल्लाहु ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह — और जब तू अपने बाग़ में दाख़िल हुआ तो क्यों न कहा: जो अल्लाह चाहे — अल्लाह के सिवा कोई क़ुव्वत नहीं?**'

बेटा, उस जुमले को याद कर लीजिए: '**मा शा अल्लाह, ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह।**' इसे कहिए जब आप अपने घर, अपने बच्चों, अपनी सेहत, अपने काम को देखें। **ये इक़रार है कि ये उस से आया और सिर्फ़ उसकी क़ुव्वत से जारी है** — ठीक वही चीज़ जिसे उस दौलतमंद आदमी ने कहने से इनकार किया।

'**इन तरनि अना अक़ल्ल मिन्क मालंव्-व वलदा** — अगर तू मुझे माल और औलाद में अपने से कम देखता है — **फ़-'असा रब्बी अंय्युअ्तियनि ख़ैरम्-मिन जन्नतिक** — **तो शायद मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से बेहतर चीज़ दे दे।**'

'**व उहीत बि-समरिही फ़-अस्बह युक़ल्लिबु कफ़्फ़ैहि 'अला मा अन्फ़क़ फ़ीहा व हिय ख़ावियतुन 'अला 'उरूशिहा** — **और उसके फल (तबाही से) घेर लिए गए, और वो अपनी हथेलियाँ उलटने लगा** उस पर जो उसने इस में ख़र्च किया था, जब कि वो अपने छप्परों पर गिर चुका था — **व यक़ूलु या लैतनी लम उश्रिक बि-रब्बी अहदा** — **और वो कहने लगा: काश मैंने अपने रब के साथ किसी को शरीक न किया होता।**'

बेटा, 'युक़ल्लिबु कफ़्फ़ैहि' — अपनी हथेलियाँ उलटना। ये उस आदमी का अंदाज़ है जो सब कुछ खो चुका: **अपने ख़ाली हाथ देखता हुआ।**

और फिर ख़ुलासा आयत, बेटा: '**अल्-मालु वल्-बनून ज़ीनतुल्-हयातिद्-दुन्या** — **माल और औलाद दुनियावी ज़िंदगी की ज़ीनत हैं** — **वल्-बाक़ियातुस्-सालिहातु ख़ैरुन 'इन्द रब्बिक सवाबंव्-व ख़ैरुन अमला** — **मगर बाक़ी रहने वाली नेकियाँ तुम्हारे रब के नज़दीक अज्र में बेहतर और उम्मीद में बेहतर हैं।**'

बेटा, 'अल-बाक़ियातुस्-सालिहात' — **बाक़ी रहने वाली** नेकियाँ। और उलमा ज़िक्र करते हैं कि इन में ये अल्फ़ाज़ शामिल हैं: **सुब्हानल्लाह, वल्-हम्दु लिल्लाह, व ला इलाह इल्लल्लाह, वल्लाहु अक्बर।** वो अल्फ़ाज़ जो कुछ ख़र्च नहीं माँगते और हर बाग़ से ज़्यादा बाक़ी रहते हैं।

मूसा और अल-ख़िज़्र — इल्म की आज़माइश

और अब तीसरी कहानी, बेटा — और ये उस चीज़ की हद के बारे में है जो एक शख़्स जानता है।

ये तब शुरू हुई, रिवायात बताती हैं, जब मूसा (अलैहि0) से पूछा गया कि सब से ज़्यादा इल्म वाला कौन है, और उन्होंने जवाब दिया कि वो ख़ुद हैं — इल्म को अल्लाह की तरफ़ लौटाए बग़ैर। और अल्लाह ने उनपर वही की कि दो समंदरों के मिलाप पर एक बंदा है जो वो जानता है जो वो नहीं जानते।

बेटा, इसे ग़ौर कीजिए। एक नबी, इल्म के बारे में एक जुमले पर दुरुस्त किया गया। और वो फ़ौरन किसी और से सीखने एक लंबे सफ़र पर निकल पड़े।

'क़ाल लहू मूसा हल अत्तबि'उक 'अला अन तु'अल्लिमनि मिम्मा 'उल्लिम्त रुश्दा — मूसा ने उस से कहा: क्या मैं आपकी पैरवी कर सकता हूँ इस शर्त पर कि आप मुझे उस में से सिखाएँ जो आपको सही समझ का सिखाया गया?'

बेटा, इस अंदाज़ में आजिज़ी देखिए: 'क्या मैं आपकी **पैरवी** कर सकता हूँ'। एक नबी, एक रसूल, वो जिसने अल्लाह से बात की — एक उस्ताद के पीछे चलने की इजाज़त माँग रहा है।

'क़ाल इन्नक लन तस्तती'अ म'इय सब्रा — उसने कहा: बेशक, आप मेरे साथ सब्र नहीं कर पाएँगे — व कैफ़ तस्बिरु 'अला मा लम तुहित बिही ख़ुब्रा — और आप उस पर कैसे सब्र करेंगे जिसे आप इल्म में घेर नहीं सकते?'

बेटा, वो जुमला इस पूरी कहानी की — और आपकी ज़िंदगी के बड़े हिस्से की — कुंजी है। **आप उस पर सब्र नहीं कर सकते जिसे आप समझते नहीं।** हर बार जब आप अपने हालात पर ग़ुस्से में आए, ये इस लिए था कि आप पूरी तस्वीर नहीं देख सकते थे।

फिर तीन वाक़िआत आए। वो कश्ती जिसपर उन्हें मुफ़्त सफ़र मिला — और अल-ख़िज़्र ने उसे ख़राब कर दिया। एक लड़का जिस से वो मिले — और अल-ख़िज़्र ने उसकी जान ले ली। एक बस्ती जिसने उन्हें खाना और मेहमान-नवाज़ी देने से इनकार किया — और अल-ख़िज़्र ने उन के लिए एक गिरती हुई दीवार बिना किसी मुआवज़े के दोबारा बनाई।

और हर बार मूसा ने ए'तिराज़ किया — क्योंकि हर ए'तिराज़, ज़ाहिर तौर पर, बिल्कुल दुरुस्त था।

और फिर वज़ाहतें आईं। कश्ती उन ग़रीब लोगों की थी जो समंदर पर काम करते थे, और आगे एक बादशाह था जो हर अच्छी कश्ती ज़बरदस्ती छीन लेता था; एक ख़राब कश्ती छोड़ दी जाती। लड़का — उसके माँ-बाप मोमिन थे, और अल्लाह जानते थे कि वो क्या बन जाएगा, और उसकी जगह उन्हें बेहतर दिया गया। और

दीवार के नीचे उस बस्ती के दो यतीमों का ख़ज़ाना था जिनका बाप नेक था, और अल्लाह ने चाहा कि वो बालिग़ हों और उसे ख़ुद निकालें।

'व मा फ़'अल्तुहू 'अन अम्री — और मैंने ये अपनी मर्ज़ी से नहीं किया।'

बेटा, इस से सूरह का सब से बड़ा सबक़ लीजिए: **नुक़सान हिफ़ाज़त था, खोना रहमत था, और बिना मुआवज़े की मेहनत उन बच्चों के लिए थी जो अभी अपनी विरासत में पैदा भी न हुए थे।**

और मूसा ने इस में से **कुछ** भी न देखा — और वो एक नबी थे।

तो बेटा, जब आपके साथ कोई ऐसी चीज़ हो जो महज़ नुक़सान लगती है, याद रखिए: **आप कश्ती पर मूसा हैं। आप पतवार में एक छेद देख रहे हैं और उस बादशाह को नहीं देख सकते जो नदी के नीचे इंतेज़ार में है।**

और अदब की दो और बारीकियाँ ग़ौर कीजिए। जब अल-ख़िज़्र ने दीवार की वज़ाहत की, उसने कहा 'तेरा रब **चाहता** था कि वो बालिग़ हों' — भलाई अल्लाह की तरफ़ मंसूब करते हुए। मगर कश्ती के बारे में उसने कहा '**मैंने** इसे ख़राब करना **चाहा**' — ज़ाहिरी नुक़सान अपने ऊपर लेते हुए। बेटा, ये वही अदब है जो इब्राहीम का 'जब मैं बीमार होता हूँ, **वो** मुझे शिफ़ा देता है'।

और दूसरी: जब मूसा अपनी शर्त भूल गए, उन्होंने कहा '**व मा अन्सानीहु इल्लश्-शैतानु अन अज़्कुरह**' — इसे मुझे शैतान के सिवा किसी ने न भुलाया। बेटा, **उन्होंने अपनी सफ़ाई नहीं दी; उन्होंने सरचश्मे का नाम लिया और आगे बढ़े।**

बेटा, और यहाँ एक और बात है। मूसा का सीखने का सफ़र भूक, थकान, और मेहमान-नवाज़ी से इनकार भी शामिल था — '**लक़द लक़ीना मिन सफ़रिना हाज़ा नसबा**', हम ने अपने इस सफ़र में ज़रूर थकान उठाई। **इल्म ने हमेशा कुछ क़ीमत माँगी है।**

ज़ुल-क़रनैन — ताक़त की आज़माइश

और चौथी कहानी, बेटा, एक ऐसे आदमी के बारे में है जिसे वो दिया गया जिसके

पीछे ज़्यादा तर लोग अपनी ज़िंदगियाँ भागते गुज़ारते हैं: **ज़मीन पर इख़्तियार।**

'**इन्ना मक्कन्ना लहू फ़िल्-अर्ज़ि व अतैनाहु मिन कुल्लि शै-इन सबबा — बेशक, हमने उसे ज़मीन में जमाया और उसे हर चीज़ का एक रास्ता दिया।**'

वो मग़रिब की तरफ़ गया यहाँ तक कि सूरज के डूबने की जगह पहुँचा, और वहाँ एक क़ौम पाई। और अल्लाह ने उसे एक इंतेख़ाब दिया: उन्हें सज़ा दो, या उन से भलाई से पेश आओ।

'**क़ाल अम्मा मन ज़लम फ़-सौफ़ नु'अज़्ज़िबुह** — उसने कहा: जो **ज़ुल्म** करे, उसे हम सज़ा देंगे — **व अम्मा मन आमन व 'अमिल सालिहन फ़-लहू जज़ा-अनिल्-हुस्ना व स-नक़ूलु लहू मिन अम्रिना युस्रा** — मगर जो ईमान लाए और नेक अमल करे, उसके लिए बेहतरीन बदला है, और हम उसे अपने हुक्म से **नर्मी** से कहेंगे।'

बेटा, इस हुक्मरान का किरदार ग़ौर कीजिए: **ज़ालिम के लिए इंसाफ़, और नेक के लिए बात में नर्मी। ताक़त ने उसे सख़्त न बनाया।**

वो मशरिक़ की तरफ़ गया, और फिर दो पहाड़ों के दरमियान एक दर्रे पर पहुँचा जहाँ उसने एक क़ौम पाई जो मुश्किल से बात समझ सकती थी। उन्होंने याजूज और माजूज की ज़मीन में फ़साद की शिकायत की, और उसे एक आड़ बनाने का मुआवज़ा पेश किया।

और बेटा, उसका जवाब देखिए: '**क़ाल मा मक्कन्नी फ़ीहि रब्बी ख़ैर — जो मेरे रब ने मुझे दिया वो (तुम्हारे मुआवज़े से) बेहतर है — फ़-अ'ईनूनी बि-क़ुव्वतिन अज्'अल बैनकुम व बैनहुम रद्मा — मगर ताक़त से मेरी मदद करो; मैं तुम्हारे और उनके दरमियान एक आड़ बना दूँगा।**'

बेटा, एक जुमले में दो सबक़। **उसने पैसा ठुकरा दिया** — एक हुक्मरान जो अपने ओहदे को पैसे में नहीं बदलता। और उसने उन्हें उस के साथ **काम** करने को कहा, उस के बजाए कि वो उनके लिए बस कर दे। **एक अच्छा लीडर अपने लोगों में सलाहियत बनाता है; उन्हें मोहताज नहीं बनाता।**

वो लोहे की चादरें लाए, और जब ख़ाली जगह भर गई तो उसने उनसे उस पर

फुँकवाया यहाँ तक कि वो आग की तरह दहकने लगा, और उस पर पिघला ताँबा उंडेला। और आड़ इतनी हमवार और मज़बूत थी कि याजूज और माजूज न उस पर चढ़ सकते थे न उस में सूराख़ कर सकते थे।

और फिर, बेटा, पूरी कहानी का ताज — जो उसने काम ख़त्म होने पर कहा:

'**क़ाल हाज़ा रहमतम्-मिर्-रब्बी — उसने कहा: ये मेरे रब की तरफ़ से एक रहमत है — फ़-इज़ा जा-अ व'अ्दु रब्बी ज'अलहू दक्का — मगर जब मेरे रब का वादा आएगा, वो इसे हमवार (बराबर) कर देगा — व काना व'अ्दु रब्बी हक़्क़ा** — और मेरे रब का वादा सच है।'

बेटा, उसे दो बाग़ों वाले आदमी से मिलाओ। उस आदमी ने अपनी जायदाद देखी और कहा 'मैं नहीं समझता कि ये कभी फ़ना होगा'। इस आदमी ने अपने दौर की सब से बड़ी इंजीनियरिंग की कामयाबी देखी और कहा: **ये मेरे रब की तरफ़ से एक रहमत है, और एक दिन वो इसे हमवार कर देगा।**

यही फ़र्क़ है उस ताक़त में जो एक आदमी को बर्बाद करती है और उस ताक़त में जिसे एक बंदा उठाता है।

बेटा, तो चारों कहानियों को साथ देखिए, क्योंकि सूरह इसी तरह पढ़ी जाना चाहती है। चार आज़माइशें: **ईमान** की आज़माइश (वो नौजवान जिन्होंने अपना वतन खोया), **दौलत** की आज़माइश (दो बाग़ों वाला आदमी), **इल्म** की आज़माइश (मूसा और अल-ख़िज़्र), और **ताक़त** की आज़माइश (ज़ुल-क़रनैन)।

और बेटा, ये ठीक वही चार चीज़ें हैं जिनके साथ दज्जाल आएगा — ईमान के बारे में एक झूठा दावा, बे-हिसाब दौलत, ग़ैब का ज़ाहिरी इल्म, और हौलनाक ताक़त। **इसी लिए उलमा ने इस सूरह को उस से हिफ़ाज़त से जोड़ा। ये तुम्हें हर क़िस्म के फ़रेब के ख़िलाफ़ पहले से तर्बियत देती है।**

अमल में सब से बड़े घाटे वाले

फिर सूरह एक तंबीह देती है, बेटा, जिसे हम में से हर एक को रोक देना चाहिए:

'क़ुल हल नुनब्बिउकुम बिल्-अख़्सरीन अअ्माला — कहो: क्या हम तुम्हें अमल के लिहाज़ से सब से बड़े घाटे वालों की ख़बर दें? अल्लज़ीन ज़ल्ल स'अ्युहुम फ़िल्-हयातिद्-दुन्या व हुम यह्सबून अन्नहुम युह्सिनून सुन्'आ — वो जिनकी कोशिश दुनियावी ज़िंदगी में ज़ाया हो गई, जब कि वो समझते हैं कि वो अच्छा काम कर रहे हैं।'

बेटा, इसे दो बार पढ़िए। **सब से बड़े घाटे वाले वो नहीं जिन्होंने कुछ न किया। वो वो हैं जिन्होंने सख़्त मेहनत की** — 'स'अ्युहुम', उनकी जद्दो-जहद — और पूरे वक़्त अपने आप से ख़ुश रहे, और वो सब कुछ बे-कार गया।

बेटा, इसी लिए इस दीन में **नियत** इतनी अहम है। एक उम्र की कोशिश कुछ ऐसा बनाने में ख़र्च हो सकती है जो अल्लाह ने कभी माँगा ही न था, या ग़लत सुनने वालों के लिए अच्छे काम करते हुए।

और इस का तोड़ इस सूरह की आख़िरी आयत है, जिस तक हम आएँगे।

फिर सूरह मोमिनीन के लिए जन्नत बयान करती है — **'इन्नल्-लज़ीन आमनू व 'अमिलुस्-सालिहाति कानत लहुम जन्नातुल्-फ़िर्दौसि नुज़ुला** — बेशक, जो ईमान लाए और नेक अमल किए — उन के लिए **फ़िरदौस** के बाग़ एक **मेहमान-नवाज़ी (ठिकाना)** होंगे — **ख़ालिदीन फ़ीहा ला यब्ग़ून 'अन्हा हिवला** — उस में हमेशा रहते हुए, उस से कभी किसी तबदीली की ख़्वाहिश न करते हुए।'

बेटा, 'नुज़ुला' का मतलब वो मेहमान-नवाज़ी है जो एक मेहमान के आने पर तैयार की जाए। **अगर फ़िरदौस स्वागत है, तो बाक़ी क्या होगा?**

और फिर अल्लाह के इल्म की वुस'अत के बारे में एक आयत, बेटा: **'क़ुल लौ कानल्-बहु मिदादल्-लि-कलिमाति रब्बी ल-नफ़िदल्-बहु क़ब्ल अन तन्फ़द कलिमातु रब्बी व लौ जिअ्ना बि-मिस्लिही मददा — कहो: अगर समंदर मेरे रब के कलिमात के लिए सियाही होता, तो समंदर ख़त्म हो जाता उस से पहले कि मेरे रब के कलिमात ख़त्म हों**, चाहे हम उस जैसा और (समंदर) मदद को ले आएँ।'

मैं तो सिर्फ़ तुम्हारा जैसा एक इंसान हूँ

और अब आख़िरी आयत, बेटा — और ये एक मोमिन के जीने के लिए पूरे क़ुरआन की सब से अहम आयतों में से एक है:

'क़ुल इन्नमा अना बशरुम्-मिस्लुकुम यूहा इलय्य अन्नमा इलाहुकुम इलाहुंव्-वाहिद — कहो: मैं तो सिर्फ़ तुम्हारा जैसा एक इंसान हूँ, जिसकी तरफ़ वही की जाती है कि तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है।'

'फ़-मन काना यर्जू लिक़ा-अ रब्बिही फ़ल्-यअ्मल 'अमलन सालिहा — तो जो अपने रब से मुलाक़ात की उम्मीद रखे — वो नेक अमल करे — व ला युश्रिक बि-'इबादति रब्बिही अहदा — और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न बनाए।'

बेटा, किसी भी चीज़ के क़ुबूल होने की दो शर्तें एक लाइन में बयान देखिए। अमल **नेक** होना चाहिए — यानी उस तरह किया गया जैसे अल्लाह ने मुक़र्रर किया, घढ़ा गया नहीं। और ये **सिर्फ़ उसी** के लिए होना चाहिए — नियत में कोई शरीक नहीं।

और 'ला युश्रिक बि-'इबादति रब्बिही अहदा' में **छुपा** शरीक भी शामिल है: कुछ इस लिए करना कि लोग देखें, ता'रीफ़ करें, या याद रखें। बेटा, ये वो ख़ामोश शिर्क है जिसे नबी ﷺ इस उम्मत के लिए सब से ज़्यादा डरते थे।

और ग़ौर कीजिए, बेटा, ये आयत 'अमल में सब से बड़े घाटे वालों' का कितनी कामिल तरह जवाब देती है। **उन्होंने सख़्त मेहनत की और सब कुछ खो दिया क्योंकि इन दो शर्तों में से एक ग़ायब थी।**

तो पूरी सूरह एक लाइन में, बेटा: **ज़मीन पर हर चीज़ ज़ीनत है और हमवार कर दी जाएगी; चार क़िस्म की आज़माइशें तुम्हारे ज़रिए तुमपर आएँगी — तुम्हारा ईमान, तुम्हारा पैसा, तुम्हारा इल्म, तुम्हारी ताक़त; और वाहिद चीज़ जो बच जाती है वो एक नेक अमल है जो सिर्फ़ अल्लाह के लिए किया गया।**

और वही, बेटा, दो जुमों के दरमियान का नूर है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. ज़मीन पर हर चीज़ 'ज़ीनह' है — ज़ीनत, ये देखने को दी गई कि कौन बेहतर

अमल करे, और नंगे मैदान बन जाने के लिए मुक़द्दर।

2. दिल **खड़े** होने के लम्हे बाँधा जाता है, उस से पहले नहीं — तुम शायद ही अमल से पहले बहादुर महसूस करोगे।

3. 'इन शा अल्लाह' के बग़ैर 'मैं कल करूँगा' हरगिज़ मत कहो — और उन तफ़्सीलात पर लड़ते अपनी ज़िंदगी ज़ाया मत करो जिन्हें अल्लाह ने बे-मुअय्यन छोड़ा।

4. अपनी नेमतों को देख कर 'मा शा अल्लाह, ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह' कहो — ये ठीक वही है जिसे बाग़ों वाले आदमी ने कहने से इनकार किया।

5. तुम उस पर सब्र नहीं कर सकते जिसे तुम समझते नहीं — जब वो महज़ नुक़सान लगे, तुम कश्ती पर मूसा हो।

6. ताक़त ने ज़ुल-क़रनैन को सख़्त न बनाया: उसने मुआवज़ा ठुकराया, लोगों से साथ काम करने को कहा, और अपनी सब से बड़ी कामयाबी को एक रहमत कहा जो एक दिन हमवार कर दी जाएगी।

7. सब से बड़े घाटे वालों ने सख़्त मेहनत की और अपने आप से ख़ुश रहे — तो आख़िरी आयत दो शर्तें देती है: एक नेक अमल, सिर्फ़ अल्लाह के लिए।

या अल्लाह, हमें हर फ़रेब से बचाइए, हमारे अमल को ख़ालिस रखिए, और इस सूरह को हमारे लिए एक नूर बना दीजिए। आमीन।